भारतीय कलाकार धीरज चौधरी की कला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन

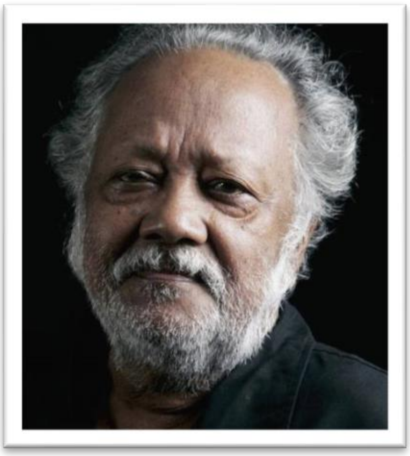

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा से चित्रकला मे
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

शोध निर्देशिका | **शोध छात्रा**

डॉ. मीनाक्षी ठाकुर
ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग
कला संकाय

नुपुर लोधी

ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

2021

शोध संकल्पना

कला मानव की रचनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति है। मानव जिस प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिवेश में रहता है वही उसके ज्ञान का स्त्रोत है। इसी स्त्रोत के माध्यम से वह अपनी कल्पना और अनुभव के द्वारा चित्र की रचना करता है। कला मनुष्य मन के अन्तः सौन्दर्य को वाह्य जगत मे रखकर एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

भारतीय चित्रकला की आरम्भिक अवस्था में आदिमानव ने अपने भावों को दीवारों, पत्थरों व चट्टानों पर अंकित किया है, और समय परिवर्तन के साथ–साथ उन्ही भावो का विकसित रूप आज हमें देखने को मिलता है। यही विकसित रूप भारतीय चित्रकला का इतिहास निर्मित करता है।

आज का युग आधुनिक युग है, जिसमें समय परिवर्तन के साथ–साथ प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत पुरानी धारणाओं को त्याग कर, नवीन धारणाओं का निर्माण तीव्रता से देखने को मिल रहा है। यही विकसित रूप हम चित्रकला में भी देख सकते है।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में हमें समय परिवर्तन के साथ–साथ चित्रकला में भी विभिन्न कालखण्ड देखने को मिलते है, इन विभिन्न कालखण्डों के इतिहास में, 19 वी. व 20 वी. शती का आधुनिक कला का इतिहास सबसे अधिक व्यापक व मनोरंजक है।

आधुनिक चित्रकला का आरम्भ मध्य 19 वी. शती में हुआ। आधुनिक चित्रकला के युग में कलाकार चित्रण कार्य के लिए स्वतन्त्र है उन पर किसी शैली, परम्परा अथवा रूप का कोई बंधन नही है। किन्तु विभिन्न प्रवृत्तियों एवं वादों से प्रभावित ये आधुनिक काल पूर्व वर्ती बिम्वों का आधार भी लेता है। इन्हीं आधारो को ध्यान में रखते हुए आधुनिक चित्रकला में कलाकारों ने नवीन प्रयोग किये तथा नवीन शैलियों को विकसित किया। परन्तु उन्होनें इन शैलियों में भारतीय चित्रकला की प्रतीकात्मकता को भी सम्मिलित किया।

कला कलाकार के अर्न्तमन की अभिव्यक्ति का दृश्य मान रूप है। प्रत्येक कलाकार कला की अभिव्यक्ति अपने अनुसार विभिन्न प्रकार से करता है, जैसे संगीतकार गायन के द्वारा, नृत्यकार नृत्य के माध्यम से, इसी प्रकार एक कलाकार अपने चित्रों के माध्यम से अपने भावों को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करता है। भारतीय कला के आधुनिक परिवेश में अनेक कलाकार है, जिन्होंने भारत के चित्रकला

जगत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इन्ही कलाकारों में से एक है बहुमुखी प्रतिभाशाली कलाकार धीरज चौधरी, जिन्होंने अपनी कलाप्रतिभा के द्वारा भारतीय चित्रकला के आधुनिक परिवेश में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक कलाकार धीरज चौधरी अपनी कृतियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। चौधरी जी के काम को गतिशील और लाइन– आधारित कोरियोग्राफी के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। उनकी बेचैन लाइन, ड्राइंग के साथ–साथ पेन्टिग दोनो में प्रदर्शित होती है। इन्होने किसी भी एक माध्यम में सीमित न होकर विभिन्न–विभिन्न माध्यमों में कार्य किया है।

मैं इनकी कृतियों से अत्यधिक प्रभावित हुई और इसलिए मैनें इनकी कृतियों का चयन अपने शोध कार्य हेतु किया। जिससे कि मैं कलाकार के व्यक्ति व कृतित्व में अधिक ज्ञान अर्जित कर इनकी कलाकृतियों का वर्णात्मक अध्ययन कर सकू।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध को आधार प्रदान करने के लिए साहित्य का पुनरावलोकन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। जिससे शोधकर्ता अपने शोध से सम्बन्धित तर्को को प्रस्तुत करता है, तथा साथ ही यह शोध के विषय और क्षेत्र से सम्बन्धित होता है। इसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि अनुसंधानकर्ता को अपने विषय से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का कितना ज्ञान है।

मैंने अपने शोध के चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। जिससे मुझे कलाकार धीरज चौधरी तथा उनकी चित्रकला के विषय में पताचला, जिससे मैं बहुत अधिक प्रभावित हुई। कलाकार धीरज चौधरी के विषय में घनिष्ठ अध्ययन करने के लिए मैंने विभिन्न पुस्तकालयों और संग्रहालयों का भ्रमण एंव पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

इस विषय पर अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए मैंने 'नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट'– नई दिल्ली, 'कॉलेज ऑफ आर्ट'– नई दिल्ली, 'राष्ट्रीय संग्रहालय'– नई दिल्ली और 'ललित कला अकादमी' – नई दिल्ली में भ्रमण, साक्षात्कार और पुस्तकों का अध्ययन किया।

कलाकार धीरज चौधरी ने अपने कलाजीवन में 80 से भी अधिक प्रदर्शनी की है, जिनमें से 16 अंतर्राष्ट्रीय है। जो एक चित्रकार के रूप में उनकी लोकप्रियता को समझने के लिए र्पयाप्त है।मैंने 'नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट'– नई दिल्ली के अन्तर्गत **'कला दीर्घा'** पत्रिका में हिन्दी पत्रकार **'इरा**

झा' द्वारा धीरज चौधरी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हुई। लेखक **'रामचन्द्र शुक्ल'** द्वारा लिखित **'कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ'** से भारतीय और आधुनिक कला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक **'डी. पी. चौधरी'** द्वारा लिखित '**मूर्तिकला का इतिहास**' से मुझे मूर्तिकला के इतिहास तथा मूर्तिकला के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। लेखक 'सुनील कुमार' द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय छापा चित्रकला आदि से आधुनिक काल तक' से मुझे छापा चित्रकला के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखिका '**Rashmi Banerjee**' द्वारा लिखित '**Kolkata Through The Eye Of Dhiraj Choudhury**' से मुझे धीरज चौधरी के समसन्य जीवन परिचय और उनके व्यक्तित्व तथा बंगाल के लिए उनके प्रेम के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। लेखक '**Dhiraj Choudhury**' द्वारा लिखित **50 Years Stuggle For Freedom Dhiraj Choudhury'** से मुझे उनके स्वतंत्रता के लिए 50 वर्षों का संघर्ष के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त इन्टरनेट वेबसाइस पर भी इस कलाकार से सम्बन्धित कई जानकारी मुझे प्राप्त हुई हैं। सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन की मुख्य विशेषत यह भी होती है, कि हम इसके अंतर्गत प्रचलित साहित्यों का अध्ययन तो करते ही हैं साथ ही उन साहित्यों का विष्लेषण भी करते है। मैने अपने शोध को तर्कपूर्ण बनाने हेतु अनेको साहित्यों का अध्ययन किया। परन्तु मैं अपने शोध में कलाकार धीरज चौधरी की कला का अध्ययन तो प्रस्तुत करूँगी साथ ही आधुनिक युग में उसकी प्रासंगिकता के महत्व को भी प्रस्तुत करूँगी जो कि मेरे शोध की मौलिक विशेषता होगी।

परिकल्पना

अपने कार्य को आदर्श रूप व दोषरहित प्रस्तुत करने के लिए शोध प्रारम्भ करने से पहले शोध परिकल्पना तैयार करना जरूरी है। जिससे हम अपने शोध के उद्देश्य के साथ शोध पूर्ण कर सकें। इस परिकल्पना को तैयार करने से पहले शोध समस्या का ढाँचा तैयार करना आवश्यक है। इसके लिए मैं आधुनिक कलाकार धीरज चौधरी की कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी।

धीरज चौधरी की कृतियों में जीवन की दो पूरी तरह से विपरीत वास्तविकताओं का प्रदर्शन होता है। ये कृतियाँ कला में अपने कलात्मक योगदान के साथ ही विभिन्न वैयक्तिक पक्षों को प्रत्यक्ष करने में महत्वपूर्ण रही है। इस शोध के माध्यम से इन कलाकार की कृतियों, व्यक्तित्व कृतित्व के वर्णात्मक मूल्यांकन पर प्रकाश डाला जायेगा।

उद्देश्य

इस शोध प्रबन्ध के अनुसार ''**भारतीय कलाकार धीरज चौधरी की कला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन**'' के कला कृतियों का वर्णात्मक अध्ययन हेतु प्रमुख उद्देश्य व लक्ष्य निम्नलिखित है–

- भारतीय कला का परिचय देते हुए आधुनिक कला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया जायेगा ।
- कलाकार के कलात्मक रचना के नवीन तथ्यों की खोज करना का प्रयास किया जायेगा ।
- कलाकार की शिक्षा व कलाकार बनने तक की जीवन यात्रा का वर्णन एवं व्यक्तित्व का वर्णन प्रस्तुत करना भी मेरा उद्देश्य होगा।
- इस शोध के अन्तर्गत कलाकार की कृतियों के विषय तथा विभिन्न प्रकार की तकनीको को समझने का प्रयास किया जायेगा ।
- विभिन्न माध्यम एवं तकनीकी पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।
- इन कलाकार के विषय में विभिन्न स्त्रोतों से सूचना एकत्र कर कलाकार की कला का आधुनिक कला क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान का वर्णन करने का प्रयत्न करूँगी।

चर

मेरे शोध प्रबन्ध के चरों के आधार सूत्र निम्नलिखित है–

- विषय– विशेषज्ञों से विषय पर वार्तालाप।
- विभिन्न कला संग्रहालय एवं पुस्तकालय का भ्रमण।
- संग्रहालयों के अध्यक्ष।
- इण्टरनेट वेबसाइट्स।
- विवरणिका (कैटलॉग)

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प–

इस शोध कार्य का अध्ययन कलाकार की कृतियों व उनके व्यक्तिवके वर्णात्मक अनुसंधान पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्तों के एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेंगे।

प्राथमिक स्त्रोत

कलाकार धीरज चौधरी की कृतियाँ।

द्वितीयक स्त्रोत

पुस्तकें, जरनल, वेबसाइट, संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों का भ्रमण, सामाचार पत्र–पत्रिकाएँआदि।

मेरी सम्मानीय निर्देशिका व विषय– विशेषज्ञों से के साथ विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार

मैंने शोध कार्य हेतु लगभग 200–250 प्रतिदर्शों का चयन किया है।

प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

प्रदत्त एकत्रीकरण की प्रविधि अवलोकन व साक्षात्कार पर आधारित रहेगी।

सीमाएँ

प्रत्येक शोध कार्य की एक समय सीमा निर्धारित होता है, जिनके आधार पर शोध कार्य पूर्ण किया जाता है। मेरे शोध कार्य की सीमित अवधि एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर, मैं अपना शोध कार्य पूर्ण करूँगी व धीरज चौधरी के दिवगत होने के कारण मैं उनका साक्षात्कार नहीं ले सकती ।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता

इस शोध अध्ययन में अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा के आधुनिक भारतीय चित्रकार धीरज चौधरी की कला कृतियों का संसार में योगदान के महत्वपूर्ण पक्ष को स्पष्ट किया जायेगा, जिसके परिणामस्वरुप मेरा शोध प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञान वर्धन में भी सहायक सिद्ध होगा।

भारतीय कलाकार धीरज चौधरी की कला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका :आधुनिक भारतीय चित्रकला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रथम अध्याय : कलाकार का व्यक्तिगत परिचय एवं पुरस्कार व सम्मान

–कलाकार धीरज चौधरी की जीवन यात्रा

1.1– जीवन परिचय

1.2–शिक्षा व प्रेरणा स्त्रोत

1.3–कला यात्रा

1.4– उपलब्धियाँ, प्रमुख प्रदर्शनियाँ, पुरस्कार व सम्मान

द्वितीय अध्याय : आधुनिक कलाकार धीरज चौधरी का सृजनात्मक परिदृश्य

2.1– चित्र कला

2.2– छापा कला

2.3– मूर्तिकला

2.4– भित्ति कला

तृतीय अध्याय : कलाकार धीरज चौधरी के कला सृजन का कला तत्वो के आधार पर विवेचन

3.1– कला तत्व

चतुर्थ अध्याय : भारतीय कलाकार धीरज चौधरी की कला का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण

4.1– विषय–वस्तु

4.2– शैलीगत विशेषतायें एवं कालक्रमानुसार चित्रों में परिवर्तन

पंचम अध्याय : कलाकार धीरज चौधरी का आधुनिक भारतीय चित्रकला में योगदान व महत्व

उपसंहार

परिशिष्ट : संदर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

पत्र–पत्रिकाएँ

कैटलॉग

वेबसाइट्स

चित्र सूची

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका में मैंने अपने शोध प्रबन्ध के विषय 'भारतीय कलाकार धीरज चौधरी की कला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन' की भूमिका के अन्तर्गत आधुनिक भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन किया जायेगा।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत अंतर्राष्ट्रीय कलाकार धीरज चौधरी की जीवन यात्रा पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगी, जिसके अन्तर्गत कलाकार धीरज चौधरी की शिक्षा व कलाकार बनने के प्रेरणा स्त्रोंत को वर्णित करते हुए उनके पुरस्कार व सम्मान पर भी प्रकाश डालने का प्रयास करूँगी।

द्वितीय अध्यायमे मैं कलाकार धीरज चौधरी के चित्रण के माध्यमों को प्रस्तुत करूँगी, जिनमें उन्होने चित्र कला, छापाकला, मूर्तिकला, भित्ति कला एवं अन्य मिश्रित माध्यमों का प्रयोग कर उन्होने अंतर्राष्ट्रीय कलाकार की उपधी प्राप्त की है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत कलाकार का रचनात्मक संसार को कला के तत्वों के आधर पर वर्णन करने का प्रयास करूँगी।

चतुर्थ अध्याय में कलाकार धीरज चौधरी के चित्रण की विषय– वस्तु पर ध्यान केन्द्रित किया जाऐगा। जिसमे उन्होने समाज में सम्बन्धित विषय जैसे– दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानताओं के साथ– साथ विभाजन की पीड़ा, प्रेम और प्राकृतिक छावियों आदि का विवरण करूँगी। साथ ही शैलीगत पक्ष को स्पष्ट करते हुए कालक्रमानुसार कलाकार द्वारा चित्रों में किये गए परिवर्तनों को शी अंकित करने का प्रयत्न करूँगी।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत भारतीय आधुनिक कलाकार धीरज चौधरी के व्यक्तित्व व कृतियों के महत्व को आधुनिक कला से सम्बन्ध करने का प्रयत्न व कलाकार का कला जगत में दिये हुए महत्वपूर्ण योगदान को वर्णित करने का पूर्ण प्रयास करूँगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, सुनील – शरतीय छापाचित्र कला, आदि से आधुनिक काल तक, शरतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000
2. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र – आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन, जयपुर अकादमी, 1995
3. चतुर्वेदी, गोपाल मधुकर – भारतीय चित्रकला, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 1989
4. तिवारी, रघुनन्दन प्रसाद – भारतीय चित्रकला और उसके मूल तत्व
5. वर्मा, महेन्द्र – भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, 2006
6. वाजपेयी, राजेन्द्र – मॉर्डन आर्ट और भारतीय चित्रकला,1981
7. शुक्ल, रामचन्द्र – कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, 2009
8. Banerjee, Reshmi - Kolakata Through The Eye of Dhiraj Choudhury, Publisher Aramva, 2012
9. Choudhury, Dhiraj - 50 Years Struggle For Freedom, A. Mukherrjee &Company,1998
10. Chaitanya, Krishna - A History of Indian Painting The Modern Period, Shakti Malik, Abhinav Publications, New Delhi
11. Kumar Bhattacharya, Sunil - Trends In Modern Indian Art, M.D. Publication Pvt. Ltd. 1994
12. James, Josef - Contemporary Indian Sculptur, An Algebra Of Figuration, Oxford University Press, Delhi Bombay Calcutta, 1998

Magazine

13. National Herald - 02 June 2018
14. India New England New – 18 May 2016
15. Outlook Money- 15 July 2016
16. Moomal New -1 June 2018
17. India’s National Magazine – 15 August 1998

Websites

18. https://books.google.com/books
19. https://www.mojarto.com/artists/dhiraj-choudhury-10005

20. https://www.thehindu.com

21. https://artrforconcern.org/artist/Dhiraj-choudhury

22. https://www.outlookindia.com

23. https://moomalnews.blogspot.com/2018/06/blog-post.html?m=1

परिशिष्ट

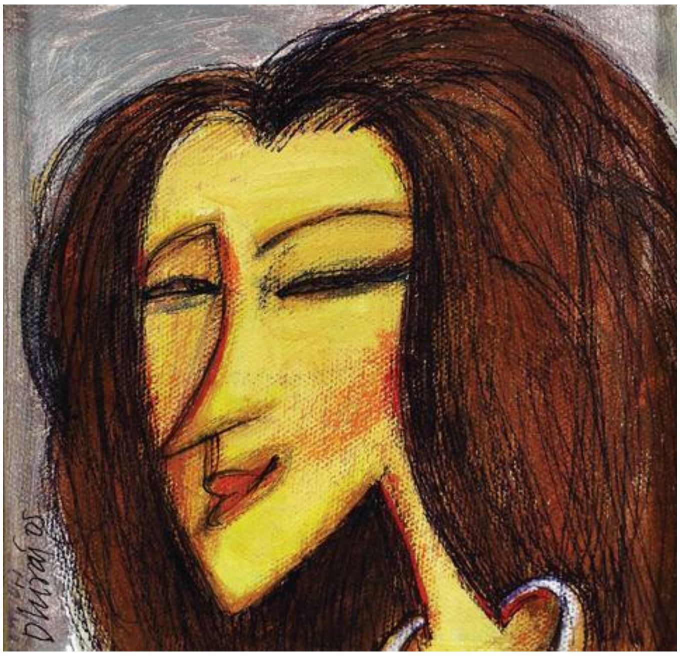

Title- 1 My Mona Lisa

Medium-Acryliconcanvas

Size - 5 x 5

Year - 2005

Location – South Asian

Art Gallery

Title- 2 Buddha

Medium - Ceramic Tile

Size - 12 x 12

Year - 2016

Location – South Asian

Art Gallery

Title-3 Jesus Christ

Medium – Burnt & Painted Wood

Size - 38 x 11.51

Year - 2016

Location – South Asian Art Gallery

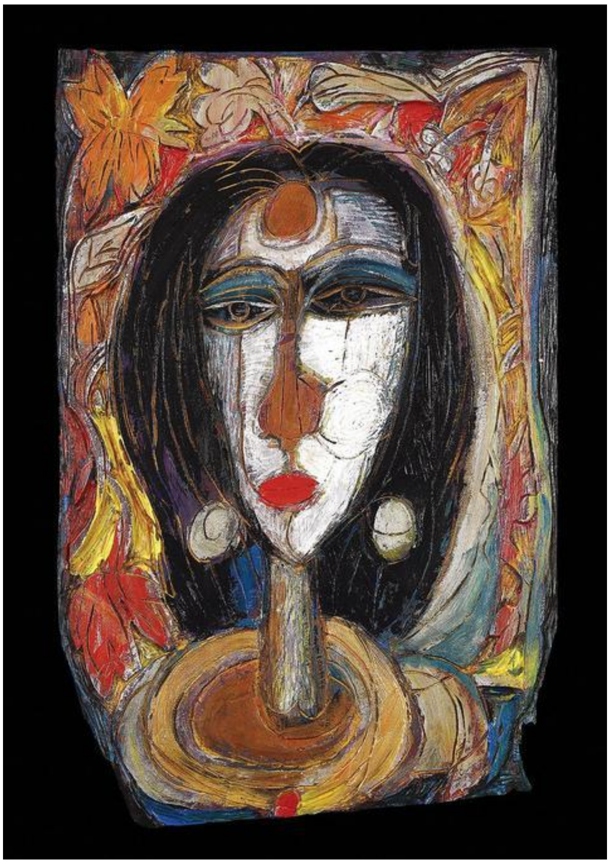

Title-4 Mona Lisa

Medium – Burnt & Painted Wood

Size - 18 x 12

Year - 2008

Location – South Asian Art Gallery

Title-5 Around Nture

Medium – Needle & Brush

Size - 18 x 18

Year - 2016

Location – South Asian

Art Gallery

Title-6 The Protective Mother

Size - 550 x 880

Year - 2012

Location – South Asian

Art Gallery